अपने माता-पिता का सम्मान करें.

हे बालकों, प्रभु में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो: क्योंकि यही उचित है। अपने पिता और माता का आदर करो; जो प्रतिज्ञा सहित पहली आज्ञा है; कि तेरा भला हो, और तू पृथ्वी पर बहुत दिन तक जीवित रहे। इफिसियों 6:1-3



अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जिस से जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तू बहुत दिन तक जीवित रहे। निर्गमन 20:12

हे मेरे पुत्र, यहोवा की ताड़ना का तिरस्कार न कर; उसकी ताड़ना से न थकना; क्योंकि यहोवा जिस से प्रेम रखता है, उस को ताड़ना भी देता है; पिता के समान वह पुत्र जिससे वह प्रसन्न रहता है।
नीतिवचन 3:11-12

सुलैमान की कहावतें. बुद्धिमान पुत्र से पिता प्रसन्न होता है, परन्तु मूर्ख पुत्र से माता उदास होती है। नीतिवचन 10:1

अपने पिता की सुन, जिसने तुझे उत्पन्न किया, और जब तेरी माता बूढ़ी हो जाए, तब उसका तिरस्कार न करना।
नीतिवचन 23:22

हे बालकों, प्रभु में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो: क्योंकि यही उचित है। अपने पिता और माता का आदर करो; (जो प्रतिज्ञा सहित पहिली आज्ञा है;) कि तेरा भला हो, और तू पृथ्वी पर बहुत दिन तक जीवित रहे। इफिसियों 6:1-3

अपने पिता का पूरे मन से आदर करना, और अपनी माता के दुखों को मत भूलना। स्मरण रखो, कि तू उन्हीं से उत्पन्न हुआ है; और जो कुछ उन्होंने तेरे लिये किया है उसका बदला तू उन्हें कैसे दे सकता है? सभोपदेशक 7:27-28

सभोपदेशक 3:1-16
1 हे बालकों, अपने पिता मेरी सुनो, और वैसा ही करो, कि तुम सुरक्षित रहोगे।
2 क्योंकि यहोवा ने पिता को पुत्रोंपर आदर दिया, और माता को पुत्रोंपर अधिकार दिया है।
3 जो अपने पिता का आदर करता है, वह अपने पापों का प्रायश्चित्त करता है;
4 और जो अपनी माता का आदर करता है, वह धन बटोरनेवाले के समान है।
5 जो अपने पिता का आदर करेगा, वह अपने लड़केबालोंके कारण आनन्द करेगा; और जब वह प्रार्थना करे, तो उसकी सुनी जाएगी।
6 जो अपने पिता का आदर करता है, वह दीर्घायु होता है; और जो यहोवा का आज्ञाकारी होगा वह अपनी माता के लिये शान्ति ठहरेगा।
7 जो यहोवा का भय मानता है, वह अपने पिता का आदर करेगा, और अपने माता-पिता की अपने स्वामियों की नाईं सेवा करेगा।
8 अपने पिता और माता का मन और काम दोनों से आदर करना, कि उन से तुझे आशीष मिले।
9 क्योंकि पिता के आशीर्वाद से लड़के-बालों का घर स्थिर होता है; परन्तु माता का शाप नेव को उखाड़ देता है।
10 अपने पिता का अनादर करके घमण्ड न करना; क्योंकि तेरे पिता का अनादर तेरे लिये कोई महिमा नहीं।
11 क्योंकि मनुष्य की महिमा उसके पिता के सम्मान से होती है; और जो माता अनादर पाती है, वह बालकोंके लिथे निन्दा होती है।
12 हे मेरे पुत्र, तेरे पिता की आयु तक सहायता करना, और जब तक वह जीवित रहे तब तक उसे शोक न करना।
13 और यदि उसकी समझ असफल हो जाए, तो उस पर धीरज रखो; और जब तू अपनी पूरी शक्ति में हो तो उसका तिरस्कार न करना।
14 क्योंकि तेरे पिता का जो उद्धार हुआ वह भुला न रहेगा, और पाप के बदले वह तुझे बढ़ाने के लिथे जोड़ा जाएगा।
15 तेरे क्लेश के दिन इसका स्मरण किया जाएगा; तुम्हारे पाप भी गर्म मौसम में बर्फ की तरह पिघल जायेंगे।
16 जो अपने पिता को त्याग देता है, वह निन्दा करनेवाले के समान है; और जो अपनी माता को क्रोध दिलाता है, वह परमेश्वर की ओर से शापित है।